Research Paper IMPACT FACTOR VALUE : 5.983 | E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 11 | ISSUE : 3 | MARCH 2025

वर्तमान किसान जीवन के परिप्रेक्ष्य में गोदान

अरविन्द कुमार [1] | जितेन्द्र कुमार [2]

[1] **(शोधार्थी) राजकीय कन्या महाविद्यालय, अजमेर (MDSU, Ajmer Rajasthan).**

[2] **MA, NET (HINDI).**

ABSTRACT:

हिंदी आधुनिक उपन्यासों की सार्थक चर्चा शुरू किए जाने पर हमें मुंशी प्रेमचंद जी के कालजयी उपन्यास गोदान 1936 का स्मरण किए बगैर इस परंपरा से आगे नहीं बढ़ा जा सकते क्योंकि यह उपन्यास ही नहीं बल्कि भारतीय किसान जीवन का चित्रण करने वाला इस्पाती दस्तावेज हैं। इसमें हम भारतीय किसानों का आर्थिक, सामाजिक, शोषण करने वाली शोषणकारी जमींदारी व्यवस्था से परिचित होंगे।किसान जीवन और शोषण प्रक्रिया के अंत:संबंधों से परिचित हो सकेंगे इसमें गाय के महत्व एवं धार्मिक दबाव को झेलते किसान की मन: स्थितियों से अवगत होंगे साथ ही शोषणकारी नीतियों तथा उन शोषकों के प्रति प्रतिरोध भी न कर सकते कि उनकी विवशता के बारे में समझ सकेंगे। भारतीय किसानों की दयनीय दशा को महसूस करते हुए उनके हालातो का मार्मिक चित्रण करना ही इस शोध पत्र का मुख्य आधार हैं।

KEYWORDS:

किसान, जमींदार, साहूकार, ऋण, मरजाद, शोषण, मजदूर, विवशता।

PAPER ACCEPTED DATE:	PAPER PUBLISHED DATE:
2nd March 2025	5th March 2025

प्रस्तावना:-

गोदान मुंशी प्रेमचंद की आकस्मिक रचना नहीं है वरन उनके जीवन भर के अनुभवों का निष्कर्ष देने वाली रचना है। स्वतंत्रता पूर्व के भारतीय किसानों के जीवन की विडंबनाओ को चित्रित करना ही प्रेमचंद जी का उद्देश्य रहा होगा;क्योंकि गरीब बेसहारा किसानो की दयनीय दशा ने उन्हें अंदर से विचलित कर दिया था और वे अपनी लेखनी के माध्यम से किसानों का पक्ष देश भर की मध्यम वर्गीय शिक्षित जनता तक पहुँचाना चाहते थे। होरी और धनिया अपनी जीवटता से शोषकों से लड़ते हुए अपना जीवनयापन करते हैं और अपने पूर्व जन्मों के कर्मों के फल के रूप में भोगने पर सहमत हैं , क्योंकि इस तरह की सांस्कृतिक धार्मिक परंपराओं ने उन्हें जड कर दिया है ताकि वे प्रतिक्रिया भी व्यक्त कर पाने का साहस भी नहीं जुटा पाते हैं।

गोदान उपन्यास की विषय वस्तु:-

इस उपन्यास में प्रेमचंद ने होरी व धनिया के जीवन के माध्यम से उत्तरी भारत के गांवों के शांति प्रेमी किसानों की कष्टप्रद जिंदगी का चित्रण किया गया है लेकिन इसमें ग्रामीण जीवन के साथ- साथ शहरी जीवन की कथा को भी चलाया है। ग्राम्य कथा कथाकार की अनुभव जगत से पुष्ट होने के कारण यथार्थवादी कथा है लेकिन शहरी कथा में वह प्रमाणिकता नहीं मिलेगी। कथाकार मानते हैं कि भारतीय ग्राम समाज की स्वायत्त इकाई नहीं है बल्कि उसका संबंध शहर राष्ट्र और ब्रिटिश हुकूमत से जुड़ा हुआ था। अतः संपूर्ण ब्रिटिश भारत के परिप्रेक्ष्य में ही ग्राम्य जीवन को समझा जा सकता है। गोदान में सेमरी व बेलारी नामक दो गांवो का चित्रण है जो अवध प्रांत के दो गांव है। होरी बेलारी का रहने वाला था तथा उसके जमींदार राय साहब अमरपाल सिंह सेमरी के निवासी थे। दोनों गावों में पांच मिल का ही फासला था। तत्कालीन समय में जमींदार को आमदनी गांव से ही होती थी। लेकिन वह उसका उपभोग शहर में करता था। जमींदार की प्रकृति को स्पष्ट किए बिना किसान जीवन के चरित्र को उद्घाटित करना अनपेक्षित है। गोदान में होरी राय साहब से मिलता है यह इसी मिलते-जुलते रहने की प्रसाद है कि अब तक जान बची हुई है नहीं कहीं पता न लगता की किधर गए। गांव में इतने आदमी तो हैं किस पर बेदखली नहीं आई किस पर कुड़की नहीं आई जब दूसरों के पांव तले अपनी गर्दन दबी हुई हो तो उन पांव को सहलाने में ही कुशलता है।राय साहब के घर पर उत्सव हैं उसमें धनुष यज्ञ होगा जिसमें होरी को राज उद्यान के माली बनने की भूमिका मिली है और होरी को इस उत्सव के लिए 5 रुपये नजराना देना है जो उसके पास नहीं है। अतः वह गहरी चिंता में डूबा हुआ है इस चिंता से मुक्ति पाने के लिए अपने बाँसों को दमड़ी बांसोड़ नामक व्यक्ति को 20 रुपये प्रति सैकड़ा के हिसाब से बेचना तय करता है और अपने भाइयों से वह रुपये 15 प्रति सैकड़ा बताता है। आगे बढ़कर यही विवाद होरी की गाय को जहर खिलाने तक चला जाता है , होरी उससे बहुत व्यथित होता है और अंततः होरी भी बीमार पड़ जाता है इस पारिवारिक कलह से मृत्यु शैया नजदीक आ जाती है और मरने पर उसकी पत्नी धनिया से दातादीन पंडित गोदान करने की बात करता है ताकि होरी की आत्मा को मुक्ति मिल सके। यह कैसी विडंबना है कि जिस गाय को पाने की कामना में होरी ने अनेक कष्ट झेले , अपमान सहा, फिर भी वह एक गाय खरीद नहीं सका और मरते समय इस गाय को दान में मांगा जा रहा है ताकि उसकी आत्मा को मुक्ति मिलेगी इस पर धनिया उस ब्राह्मण से कहती है "महाराज घर में न गाय हैं , ना बछिया, ना पैसा, यही पैसे हैं यही गोदान है"। उपन्यास के अंत में हरी जब मरणासन्न अवस्था में था तब शायद उसे वही गाय याद आई और अंतिम नसीहत के तौर पर भी धनिया को गाय के बारे में ही कहा अब जाता हूं गाय की लालसा मन में ही रह गई कथाकार इस कथन के माध्यम से धर्म लोलुप स्वार्थी प्रवृत्ति के पंडितों पर करारी चोट करते हैं। ऐसी मान्यता थी कि मरते वक्त अगर गाय का दान ब्राह्मणों को दिया जाए तो मरने वाला व्यक्ति सीधा स्वर्ग पहुंचता है। इस धार्मिक परंपरा को बनाए रखने का भरपूर प्रयास दातादीन नामक पंडित द्वारा किया जाता रहा है। ऐसी धार्मिक मान्यताओं का सहारा बनकर भोले भाले और अशिक्षित गरीब लाचार किसानों का शोषण करना ही पुरोहित वर्ग का अति प्रिय सुलभ कर्म रहा है। इस तरह हम देखते हैं कि गोदान की कथा की प्रासंगिकता भारतीय किसान या श्रमजीवी तबका जो गाय पालने की छोटी सी अपेक्षा से संबंध रखता है बड़ा सार्थक है वही गोदान होरी जैसे किसानों के जीवन की चरम उपलब्धि का प्रतीक बन जाती है तथा अपूर्ण आकांक्षा का प्रतिरूप हो जाती है। यह उपन्यास होरी व धनिया की कहानी भले ही हो बल्कि संपूर्ण भारतीय किसानो की यही स्थिति कमोबेश रही है। कथाकार का इन सब विसंगतियों को भारतीय मध्यमवर्गीय शिक्षित पाठकों तक अपनी संवेदना को पहुंचाना चाहते थे। जो वर्तमान में भी प्रसांगिक बना हुआ है। भारतीय किसानों की आत्महत्याओं की खबरें आए दिन अखबारों की सुर्खियां बनती रहती है,कर्ज न चुका पाने के कारण वे दिनो दिन गरीब होते जाते हैं। और आधुनिक पीढ़ियों को कृषि प्रधान देश होने के उपरांत भी कृषि से मोह भंग हो रहा है जो कि देश के

लिए अनुचित है,विचारणीय है।अधिकांश किसान कृषक से कृषि श्रमिक बनकर जीवनयापन करने को तत्पर हो रहे हैं।यह हमारे देश व समाज के लिए एक विडंबना पूर्ण विषय है। हमारे देश का दुर्भाग्य है ही कि हमें एक दिन वह भी देखना पड़ेगा जब अनाज के दाने-दाने को प्राप्त करने के लिए विदेश का मोहताज होना पड़ता था। यह तो सब हमारे कृषि वैज्ञानिकों की नवीन प्रयोग जैसे हरित क्रांति आदि के कारण हम आत्मनिर्भर बन सके हैं ।

भारतीय किसान एवं ऋण की समस्या:-

गोदान का मूल प्रतिपाद्य किसान की ऋण की समस्या है जो स्वतंत्रता के बाद भी जैसी की तैसी बनी हुई है। क्योंकि वर्तमान परिप्रेक्ष्य में भी किसानों का आर्थिक शोषण बंद नहीं हुआ है। बाजारीकरण की नीतियां भी अधिकांश किसानों को गरीबी से त्रस्त करने पर आमादा है। अपनी साख को बचाने के लिए बैंकों से भी ऋण की सुविधा का उपयोग करता है। पर इस महंगाई के कारण उसका पुनर्भुगतान करने में अपने को असमर्थ पाता है। और उसके ऋण का हिसाब दिनों दिन विकास करता रहता है भले ही किसान की अवनति होती हो। गोदान हिंदी उपन्यास संसार में अहम दस्तावेज हैं। भारतीय ग्रामीण एवं कृषि संस्कृति के इस महाकाव्यात्मक उपन्यास में समकालीन ब्रिटिश भारतीय जन जीवन की धड़कनें सुनाई देती हैं। गोदान अपने युग का अभिन्नतम दस्तावेज ही नहीं है अपितु इसके मायने वर्तमान परिप्रेक्ष्य में भी प्रासंगिक बने हुए हैं। होरी कथा का महानायक तो है ही भारतीय कृषि संस्कृति के ग्राम्य जीवन के ध्वंसावशेषों का कातर पुरुष है। "जहां सीधे-सीधे राय साहब के कारिंदे उसकी जमीन छीनने नहीं पहुंचते अथवा अंग्रेजी राज्य के कचहरी कानून भी उसकी जमीन छीनने नहीं पहुंचती परंतु उसका घर लूट जरूर जाता है,उसकी जमीन छिन जरूर जाती है वस्तुत: तो यहां शोषण का रूप ही दूसरा है। राय साहब किसानों से पैसा निकालने के लिए जो दाव पेंच ईजाद किए हैं उन्हें देखते हुए ज्ञानशंकर राय, कमलानंद, राजा विशाल सिंह, अबोध बच्चे मालूम होते हैं।" होरी ने निम्न व्यक्तियों से कर्ज लिया था जिनमें दातादीन पंडित ,मंगरु, दुलारी सहुआईन और झींगुरी सिंह थे। "होरी महाजन और जमींदार के शोषण का कभी खत्म न होने वाला सिलसिला है। वह उन किसानों का प्रतिनिधि है जिसकी जमीन हाथ से निकलती जाती हैं और वे मजदूरी के लिए विवश किए जाते हैं। अपनी जमीन खोकर न सिर्फ होरी बल्कि उसका सारा परिवार धनिया रूपा सोना सभी खेतीहर मजदूर बन जाते हैं। किसान से मजदूर बनने की यह त्रासदी सिर्फ होरी की त्रासदी ना होकर संपूर्ण भारतीय किसानों की त्रासदी है,क्योंकि गोदान सिर्फ होरी की कथा नहीं बल्कि संपूर्ण भारतीय किसान की कथा है। '' होरी का चरित्र भारत के अजेय किसान का चरित्र है।गोदान उसकी भगीरथ परिश्रम की गाथा है। आज 30 साल तक जीवन से लड़ते रहने के बाद होरी परास्त हुआ है और ऐसा परास्त हुआ है,मानो उसे नगर के मुख्य द्वार पर खड़ा कर दिया गया है। और जो आता है,वही उसके मुंह पर थूक कर चला जाता है। गोदान में कृषक जीवन का प्रसाद कहा गया है- उधारी के बाद बार-बार तगादा करना बिगड़ना और गालियां देना बावजूद इसके होरी को शर्म महसूस ना होना और इस व्यवहार का आदी होना होरी को भोला नामक व्यक्ति से उधार में गाय मिलती है क्योंकि वह भोला की शादी करवाएगा ऐसी शर्त पर लेकिन वह शर्त भी अधूरी रहती नजर आ रही है।आखिर गाय तो होरी को मिल ही जाती है। भोला के यहां से गाय लेकर लौटते वक़्त दोनों बाप बेटे इतने खुश थे मानो ब्याह करके लौटे हैं।होरी गाय की चिर संचित अभिलाषा के पूर्ण होने से हर्षित था तो गोबर को झुनिया के रूप में बहुमूल्य संपत्ति मिल गई थी। गाय हरी के लिए भक्ति और श्रद्धा की वस्तु नहीं सजीव संपत्ति थी वह उसके द्वारा द्वारकी शोभा और घर का गौरव बढ़ाना चाहता था। अंत में धनिया कहती है 80 रुपये गए तो गए लाख रुपए का बालक गोबर के होने वाला पुत्र के संबंध में तो मिल गया अर्थात दंड के बावजूद भी अपने परिवार को बचाना चाहती है।

गोदान में पारिवारिक अलगाव:- होरी की गाय को देखने पूरा गांव आता है किंतु उसके दोनों सगे भाई हीरा व शोभा नहीं आते हैं। होरी चाहता था कि दोनों आकर देख लेते और प्रसन्न हो जाते तो उसकी मन: कामना पूरी हो जाती। होरी रूपा को उन्हें बुलाने के लिए कहता है तो रूपा नट जाती है,किंतु होरी के साथ फूल वाली थाली में खाने के गौरव को प्राप्त करने से वंचित होने की होरी की बात पर वह मान जाती है रास्ते में धनिया रूपा को मिलती है तो वह उसे वहां जाने नहीं देती है। अतः स्पष्ट है की होरी एक ऐसा चरित्र है जो अपने भाइयों के मनमुटाव के उपरांत भी पूरे परिवार को साथ लेकर चलना चाहता है। ताकि पारिवारिक विघटन होने से बच सके , एकता बनी रहे यह बात वर्तमान समय में भी प्रासंगिक साबित होती हैं कि अपने भाई हीरा का घर से डर कर भाग जाना और गाय मारने के सिलसिले में पूलिस के तहकीकात में भी होरी अपने भाई को दोष मुक्त करार देता है ताकि उसकी सामाजिक मर्यादा बनी रहे अंत में हीरा के भागने पर वह धनिया से कहता है गाय गई तो गई मेरे सिर पर एक विपत्ति पूनिया की फ़िक्र डाल गई क्योंकि वह एक जिम्मेदार बड़े भाई का दायित्व, सब कुछ नष्ट होने पर भी निभाना चाहता है। होरी ना चाहते हुए भी दातादीन के पास साझेदारी में बुवाई,बँटाइ करने के प्रस्ताव पर हामी भर देता है ताकि लगान निकल जाए अन्यथा बेदखली आ धरी है।

गोदान में विधवा विवाह का समर्थन

"मर्द की औरत मर जाए,तो दूसरा विवाह कर ले,कोई रोक टोक नहीं मगर औरत विधवा हो जाए,तो जिंदगी भर आग में जलती रहे। यह कौन का न्याय हैं?" धनिया इस संवाद में समाज की पितृसत्तात्मक सोच पर सवाल उठाती है। वह बताती है कि किस तरह पुरुषों को दूसरा विवाह करने की स्वतंत्रता है, लेकिन विधवा स्त्रियों को पुनर्विवाह की इजाजत नहीं दी जाती। यह संवाद प्रेमचंद के सुधारवादी विचारों को दर्शाता है। मुंशी प्रेमचंद भारतीय नारियों की दयनीय दशा एवं उनके पुरुष प्रधान समाज में स्त्रियों की जो स्थिति थी उसे सुधारना चाहते थे।अपने उपन्यास के पात्र के गोबर जो संघर्षशील, साहसी एवं परंपराओ के विरोध में अपनी भावाज मुखर करता है, और अपने पिता से भी बगावत करने की बात करता है , क्योंकि वो भी इस तरह की कर्म पर कर्ज में डूबते हुए समान से विचलित हो चुका था। वह कई दफ़ा होरी से कह चुका है,पर वह एक सरल सादगी से युक्त किसान है अपने इस तरह के कष्ट पूर्ण जीवन को अपने कर्मफल का परिणाम समझते हुए भोगने पर विवश है। गोबर यह नहीं चाहता वह ग्रामीण होते हुए भी आधुनिकता का स्वीकार करता है , रूढ़ियों,सामाजिक बाह्य आडंबर आदि को भी न मानता।इस कारण वह भोला की विधवा बेटी झूनिया से विधवा विवाह छूपकर ही कर लेता है, यह बात तब सामने आई जब झूनियाँ पेट से थी।"विधवा क्या इंसान नहीं होती ?क्या उसे जीने का हक नहीं?"प्रेमचंद जी भी यही चाहते थे की नारियों की भी सम्मान, उचित अधिकार मिलने चाहिए तब ही समाज सुधरेगा व विकसित होगा। और गोबर की साहसी माँ धनिया भी इस कृत्य मे पहाड बनकर गोबर और झूनियाँ के प्रेम प्रसंग को सहर्ष स्वीकार करती है , धनियाँ भी भले ही अनपढ़ हो लेकिन वह भी ऐसी सामाजिक कुरीतियों को सिरे से खारिज करती है एवं झूनिया का साथ देती है।

निष्कर्ष:-

गोदान होरी जैसे अल्प भूधारक किसान का आजीवन सामंती व्यवस्था के विरुद्ध संघर्ष भारतीय किसान की त्रासदी को स्पष्ट करता है , अपनी जान और कूल मर्यादा से भी प्यारी जमीन को बचाने के असफल प्रयासों में अपना सब कुछ खोकर भी वह मजदूर हो जाने पर विवश हो जाता है तत्कालीन जमींदार,सेठ,साहूकार,अफसर,पटवारी और पुरोहित वर्ग जैसी अनेक शोषणकारी शक्तियाँ एक किसान को भूमिहीन कर मजदूरी की ओर अभिप्रेरित करने में सहायक सिद्ध होती है। वास्तव में गोदान एक ऐसे कालखंड की व्यथा है जिसमें सामंती समाज के अंग किसान एवं जमींदार दोनों ही मिट रहे हैं। और नई पूंजीवादी व्यवस्था के मजदूर व उद्योगपति उनका स्थान प्राप्त कर रहे हैं। प्रेमचंद अपने साहित्य में बार-बार किसान द्वारा एक बारिय कर्ज लेने पर भी जिंदगी भर उसका ब्याज देने पर भी वह मूल कर्ज से मुक्त नहीं हो पाता है। इस कर्ज को वह आजीवन ढोते रहने को विवश है। और अंतत्तोगत्वा अपनी जमीन बेचकर ही उससे निजात मिलती है। यह बड़ा ही सोचनीय विषय है कि होरी इतनी दुविधाओं में गुजरने के बाद भी अपने को समर्पित भाव से जूझता हुआ दृष्टिगोचर होता है। उसका शोषकों के समक्ष समर्पण ही अपने बचाव का प्रयास समझता है समर्पण और समझौता ही किसान जीवन की त्रासदी के दो महत्वपूर्ण सत्य है। होरी का किसान से मजदूर बनने का निर्णय अपना नहीं है यह उसकी विवशता है और आर्थिक सामाजिक सांस्कृतिक धार्मिक दबावों का परिणाम है। स्पष्ट होता है कि होरी का कृषक सभ्यता संयुक्त परिवार व्यवस्था आदि के प्रति मोह है लेकिन फिर भी वह उन्हें बचाने में अक्षम पाता है। अंत में इस शोषणकारी व्यवस्था से बगावत करने वाले पात्र गोबर का भी मन ग्राम्य कृषि संस्कृति से उठ जाता है वह शहर की ओर पलायन करता है और अपनी कमाई का एक रुपया भी घर नहीं भेजना चाहता केवल ऊपरी सुधारो से किसानों का भला नहीं हो सकता क्योंकि सरकारी तंत्र के साथ जमींदारों के संबंध बहुत गहरे एवं घनिष्ठ थे। इसलिए तंत्र के साथ-साथ पूरी व्यवस्था को ही परिवर्तित करने की आवश्यकता थी। अंतत गोदान में होरी की गाय खरीदने की आकांक्षा का पूर्ण न होना केवल व्यैक्तिक आकांक्षा के संदर्भ में ही अभिव्यक्त नहीं हुआ है यहां कथाकार भारतीय किसानों की आर्थिक सामाजिक और सांस्कृतिक यथार्थता को उजागर करना चाहते थे।

REFERENCES

1. गोदान,प्रेमचंद,कमल प्रकाशन,नई दिल्ली

2. प्रेमचंद और उनका युग,डॉ.रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन,दिल्ली

3. गोदान एक पुनर्विचार,जैनेंद्र कुमार, पूर्वोदय प्रकाशन,नई दिल्ली

4. गोदान एक नया परिप्रेक्ष्य,गोपालराय,अनुपम प्रकाशन,पटना

5. प्रेमचंद और भारतीय किसान रामबक्ष, नई दिल्ली

6. प्रेमचंद आलोचनात्मक परिचय,रामविलास शर्मा,राजकमल प्रकाशन,दिल्ली

7. प्रेमचंद साहित्यिक विवेचन,नन्ददुलारे वाजपेयी, राजकमल प्रकाशन,दिल्ली

8. किसान,राष्ट्रीय आंदोलन और प्रेमचंद;1918-1922,वाणी प्रकाशन,नई दिल्ली